B-3~~3~~4
L-28
Ethics

जे. एस मिल

- उत्कृष्ट, उपयोगितावाद के समर्थक

उपयोगितावाद कैसे ?

- अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख
- उत्कृष्टता
- उत्कृष्ट विषयों में गुणात्मक भेद मानते हैं और वे शरीरिक सुख की अपेक्षा मानसिक सुख या बौद्धिक सुख को अधिक मूल्यवान मानते हैं इनके अनुसार -

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

स्वार्थ से परार्थ की ओर रूपान्तरण कैसे ?
मिल के मतानुसार, व्यक्ति स्वभावत: स्वार्थी होता है परन्तु कालान्तर में वह परार्थी हो जाता है इसके दो मुख्य कारण हैं -
(i) रूचि का रूपान्तरण
(ii) पांच नैतिक अंकुश

रूचि का रूपान्तरण :-

मिल के अनुसार परार्थ का जन्म और विकास स्वार्थ से होता है, आरम्भ में हम अपने सुख को ध्यान में रखकर दूसरे का हित करते हैं परन्तु कालांतर में हमारी रूचि का रूपान्तरण हो जाता है। और हम दूसरों के सुख को ही अपना सुख मानने लगते हैं।

पाँच अंकुश :-

मिल ने स्वार्थ से परार्थ की ओर बढ़ने के सन्दर्भ में पाँच अंकुश बताये हैं, इनमें से चार बाह्य हैं और एक आंतरिक है।

बाह्य- प्रकृति, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक

आन्तरिक- यह मनुष्य की आत्मा पर अंकुश है जो कर्तव्य भावना पर आधारित है।

यह मनुष्य जाति के सुख की कामना है। मनुष्य में दूसरों के सुख ! दुःख को ध्यान में रखकर कार्य करने की सामाजिक भावना होती है इसी कारण हम दूसरों को दुःख में देखकर दुःख का अनुभव करते हैं और दूसरों के कर्तव्य का उल्लंघन करने पर दुःख का अनुभव करते हैं तथा दूसरों के सुख को देखकर कर्तव्य का पालन करने पर सुख का अनुभव करते हैं।

मिल ने बेंथम के विपरीत सुखों में मात्रात्मक भेद के साथ-साथ गुणात्मक भेद को भी स्वीकार करते हैं। तथा इस गुणात्मक भेद को अधिक महत्व देते हैं इनके अनुसार मानसिक सुख शारीरिक सुख की अपेक्षा अधिक मूल्यवान और वांछनीय है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

इस सन्दर्भ में उनका कथन है कि -" एक संतुष्ट सुअर होने की अपेक्षा एक असंतुष्ट मनुष्य होना अधिक अच्छा है। और एक संतुष्ट मूर्ख होने की अपेक्षा एक संतुष्ट सुकरात होना अच्छा है।"।

वस्तुतः संगीत, कविता, पेंटिंग, दार्शनिक व अध्यात्मिक चिंतन आदि से प्राप्त सुख इन्द्रियों से प्राप्त सुख की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट होता है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

मिल के अनुसार योग्य निर्णायक, बौद्धिक सुख को इन्द्रियों वरीयता देती हैं क्योंकि मनुष्य में गरिमा की भावना होती है योग्य निर्णायक वे हैं जिन्होंने दोनों प्रकार से सुखों का अनुभव किया है।

[इमैनुअल काण्ट]

- जर्मन दार्शनिक एवं नैतिक विचारक।
- मानव व्यक्तित्व का मूल तत्व उसकी इच्छा या भावना नहीं है बल्कि बुद्धि या विवेक है।
- नैतिक नियम बुद्धि का नियम है।

मानव → ऐच्छिक कर्म → उचित या अनुचित के रूप में निर्धारित

↓

कैसे

काण्ट ← परिणाम ← कैसे → परिणाम या फल

काण्ट ↓ इनका दर्शन नैतिक दर्शन कहलाता है।

परिणाम: नैतिक नियमों के आधार पर परिणाम का निर्धारण होता है।

→ परिणाम बुरा भी हो तब भी कर्म उचित होगा।

परिणाम या फल ↓ परिणामवादी — कांट नैतिक सिद्धांत समर्थक नहीं हैं।

जर्मन दार्शनिक कांत परिणाम निरपेक्ष नीतिशास्त्र का समर्थन करते हैं। इनके अनुसार किसी कर्म के उचित या अनुचित होने का निर्धारण उस कर्म से उत्पन्न फल या परिणाम के आधार पर नहीं होता बल्कि कर्म के मूल में निहित मनुष्य की विशुद्ध कर्तव्य चेतना

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

या नैतिक नियमों के आधार पर होता है।

नैतिक नियम :-

काण्ट के मतानुसार नैतिक नियम इच्छाओं, भावनाओं या प्रवृत्तियों पर आधारित न होकर बौद्धिक नियम हैं। बौद्धिक होने के कारण, नैतिक नियम अनिवार्य, अपरिवर्तनशील, सार्वभौम एवं परानुभविक हैं। नैतिक नियमों में कोई अपवाद नही होता।

नैतिक नियम निरपेक्ष आदेश हैं क्योंकि इनका सुध्लत, देश, काल, परिस्थिति, प्रयोजन एवं परिणाम पर निर्भर नही होता। पुनः यह आदेश स्वरूप है क्योंकि इनमें बाध्यता का तत्व होता है। परन्तु नैतिक नियम ईश्वरीय आदेश नही है बल्कि बुद्धि का आदेश है।

बुद्धि के दो रूप हैं-

1. शुद्ध बुद्धि - इसका संबंध सैद्धांतिक विवेचना से है।

2. व्यवहारिक बुद्धि - इसका संबंध नैतिक विवेचना से है।

नैतिक नियम व्यवहारिक बुद्धि के आदेश हैं।
आदेश दो प्रकार के हैं:-

(i) सापेक्ष आदेश :-

यह वे आदेश है जो किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ करने या न करने के लिए बाध्य करते हैं। ये इच्छा, भावना, शर्त या परिणाम पर निर्भर करते हैं।

(ii) निरपेक्ष आदेश :-

यह वे आदेश हैं जो किसी उद्देश्य के प्राप्ति के साधन न होकर अपने आप में साध्य हैं। इनके पालन में किसी शर्त, लक्ष्य या परियोजन की बात नही होती है।

निरपेक्ष आदेश की विशेषताएं :-

- यह व्यवहारिक बुद्धि का आदेश है। इसमें भावना, बुद्धि का कोई स्थान नही है।
- यह किसी परिणाम, शर्त या उद्देश्य पर आधारित नही है।
- निरपेक्ष आदेश तथ्यात्मक न होकर मूल्यात्मक है।
- इस रूप में इसका संबंध "है" से न होकर "चाहिए" से है।
- निरपेक्ष आदेश एक आदेश है क्योंकि इसमें बाध्यता का तत्व होता है।
- निरपेक्ष आदेश का आधार शुभ संकल्प से आशय है कि निरपेक्ष आदेश शुभ संकल्प

से अनिवार्यतः संकल्पित रहता है।

शुभ संकल्प विशुद्ध कर्तव्य की चेतना पर आधारित और उससे प्रेरित संकल्प ही शुभ संकल्प है।

- विशेषता :-

- शुभ संकल्प ही एकमात्र स्वतः साध्य शुभ है अतः अपने आप में शुभ है।
- शुभ संकल्प का शुभत्व किसी परिणाम, प्रयोजन या परिस्थिति पर आधारित नही होता बल्कि यह बौद्धिक होता है।
- शुभ संकल्प युक्त कर्मों का ही नैतिक महत्व है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

काण्ट के पाँच नैतिक-नियम / सूत्र

1. सार्वभौमिकता का नियम :- हमे केवल उसी नियम के अनुसार कार्य करना चाहिए जिसे आप एक सार्वभौमिक नियम बन जाने की संभावना स्वीकार करते है। जैसे- हत्या, चोरी आदि कर्मों को सार्वभौमिक नही बनाया गया अतः नैतिक दृष्टिकोण से यह अनुचित है।

2. मानव को साध्य मानने का नियम :- ऐसा कर्म करे कि मानवता चाहे आपके अंतर हो या दूसरों के अंतर हो वह सदैव साध्य बनी रहे, साधन मात्र न बने।

नैतिकता की तीन पूर्व मान्यताएं :-

काण्ट के मतानुसार नैतिकता की व्याख्या हेतु उपायों को मानना आवश्यक है।

(i) संकल्प की स्वतंत्रता

(ii) आत्मा की अमरता

(iii) ईश्वर का आस्तित्व

[हीगल]

नैतिकता के तीन चरण

1- बाह्य आरोपित नैतिकता :- नैतिकता के विकास के प्रथम चरण में व्यक्ति राजकीय कानूनों या सामाजिक नियमों से बाध्य होकर दण्ड के भय एवं पुरस्कार के लोभ के कारण उचित कर्मों का संपादन करता है और अनुचित कर्मों से दूर रहता है। ये नैतिकता की विकास की निम्न अवस्था है। इसमें नैतिकता पूर्णतः बाह्य आरोपित होती है इसमें उल्लंघन की स्थिति में दण्ड का विधान होता है।

2. अंतः प्रेरित नैतिकता :- विवेक शक्ति के विकसित होने पर मनुष्य भय या लोभ के बजाय अपने दायित्वों को समझते हुए अपने अंतःकरण से प्रेरित होकर राज्य और समाज के

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

नियमों का पालन करता है। परंतु इस स्थिति में भी व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में संघर्ष हो सकता है।

3. व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित का एकीकरण

नैतिकता के विकास की उच्चतम अवस्था में व्यक्तिगत हित और सार्वजनिक हित का एकीकरण हो जाता है मनुष्य मे विवेकशीलता के पर्याप्त विकास के साथ मनुष्य का समाज के साथ नैतिक संबंध स्थापित हो जाता है। व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में विरोध दूर हो जाता है इस अवस्था में व्यक्ति सामाजिक हित मे ही अपना हित मानने लगता है और व्यापक सामाजिक हित के कार्मों को संपादित करने लगता है स्पष्ट है कि उच्चतम नैतिक अवस्था की प्राप्ति हेतु विवेक शक्ति का विकसित होना आवश्यक है।

"जीने के लिए मरो"

- मध्ययुगीन ईसाई दर्शन में "जीने के लिए मरो" का आशय था आत्मा के मुक्ति के लिए शरीर का नाश आवश्यक है क्योंकि शरीर आध्यात्मिक विकास में बाधक है हीगल इसका खण्डन करते हैं और इस सूत्र की नवीन व्याख्या करते हैं। इनके अनुसार आत्मा के आध्यात्मिक विकास हेतु द्वंद, संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियों को बुद्धि द्वारा नियंत्रित एवं नियमित

करना आवश्यक है।

हीगल यहाँ भावनाओं एवं इच्छाओं के दमन की बात नहीं करते बल्कि बुद्धि के नियंत्रण में भावनाओं या इच्छाओं की संतुष्टि की बात करते हैं। वे भावनाओं एवं इच्छाओं के परिष्करण एवं परिमार्जन पर बल देते हैं।

" व्यक्ति बनो और दूसरों का व्यक्ति के रूप में सम्मान करो "

आशय है कि मनुष्य को अपने पूर्ण व स्वतंत्र विकास के लिए सदैव प्रयास करना चाहिए व साथ ही दूसरों के व्यक्तित्व का आदर व सम्मान करना चाहिए। तात्पर्य है कि व्यक्ति अपनी क्षमता का विकास करे परंतु साथ ही साथ दूसरों की स्वतंत्रता और सामाजिक हित में बाधा न डाले। चूँकि व्यक्ति समाज का ही अंग है अतः सामाजिक हित की प्राप्ति ही व्यक्ति का कर्तव्य है।

हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनी संकीर्ण पार्थिक प्रवृत्तियों का नियंत्रण करे उनका शोधन करे और विवेकपूर्ण जीवन की ओर बढ़े ऐसा होने पर ही व्यक्ति की सार्थकता सिद्ध होती है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

ब्रैडले :-

"मेरा स्थान व उससे संबंधित कर्तव्य"

- ब्रेडले के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति कुछ विशिष्ट योग्यताओं के साथ जन्म लेता है सबमें एक समान योग्यता नही होती अतः प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कर्म को नही कर सकता। प्रत्येक व्यक्ति का समाज में एक स्थान है और उस स्थान के अनुसार उसके कुछ कर्तव्य हैं अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार अपने कर्तव्यों का संपादन करना चाहिए ऐसा होने पर ही व्यक्ति व समाज का पूर्ण विकास होगा।

KGS IAS

नैतिकता के सन्दर्भ में तीन अवधारणायें :-

सुखवाद	आत्मपूर्णतावाद	बुद्धिपरकतावाद
-इच्छा, भावना और हीन प्रवृत्ति से संचालित। ↓ - इनकी संतुष्टि का प्रयास जीवन का चरम लक्ष्य है। -परिणाम- व्यक्ति की इच्छाओं एवं भावनाओं में परस्पर भिन्नता है। हितों में टकराव की स्थिति।	मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास ही नैतिकता का आदर्श है। मानव व्यक्तित्व के दो पक्ष हैं- भावना इच्छा प्रवृत्तियाँ आदि — बुद्धि या विवेकशीलता आत्मपूर्णतावाद का यह मानना है कि	भावनाओं एवं इच्छाओं का दमन कर बुद्धि के नियमों एवं आदेशों का पालन करना ही नैतिकता है। नैतिक नियम, बुद्धि के आदेश। इच्छाओं भावनाओं का कोई स्थान नही।

विरोध एवं परस्पर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न ↓ सामाजिक एकता और समरसता की भावना में कमी ↓ चार्वाक आदि	इच्छाओं, भावनाओं और संवेगो की संतुष्टि विवेक के नियंत्रण में होनी चाहिए अर्थात व्यक्ति के निम्न । हीन प्रवृत्ति पर उच्च प्रवृत्ति का नियंत्रण या निर्देशन होना चाहिए। ऐसी स्थिति में मानव व्यक्तित्व की पूर्णता सिद्ध होती है ऐसा होने पर व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में विरोध नहीं होता बल्कि सामंजस्य की स्थापना होती है।	यह भी एक प्रकार का एकांकी दृष्टिकोण है। क्योंकि मनुष्य में केवल बुद्धि ही नहीं अपितु इच्छाए और भावनाए भी है।

KGS IAS